RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.com

पलवल के सूफी स्थलों का अध्ययन : मध्यकालीन वास्तुकला के संदर्भ में

अनीता कुमारी

सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग एस पी एम कॉलेज फॉर वुमेन (दिल्ली विश्विधालय) वैस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली

भौगोलिक व सामाजिक दृष्टि से वर्तमान हरियाणा, मध्यकाल में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था जो अनेक प्रसिद्व लड़ाइयों का दृष्टा रहा है। दिल्ली के निकट होने के कारण उत्तर–पश्चिम दिशा से हिन्दुस्तान में होने वाली किसी भी घटना का यहाँ के लोगों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता रहा हैं।[1] मध्यकाल मे हरियाणा एक स्वतंत्र ईकाई न होने के कारण इसको दिल्ली, आगरा, अजमेर, लाहौर इत्यादि प्रषासनिक ईकाईयो के अर्न्तगत गिना जाता था।यह क्षेत्र नवम्बर 1966 एक स्वतंत्र ईकाइ के रुप में उभर कर सामने आया।[2]

सूफी शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी वाद–विवाद रहा है। अलग–अलग विद्वानों ने अपने तर्कों सहित इस सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न शब्दों से इसकी उत्पत्ति बताई है। परन्तु आजकल जिस परिभाषा का अधिक समर्थन किया जाता है उसके अनुसार सूफी शब्द 'सूफ' से लिया गया है। यह ऊन का बना हुआ एक प्रकार का लबादा था। सूफी उसे कहा जाता था, जो इस प्रकार के वस्त्र धारण करता था। अर्थात् सूफियों की अलग पौशाक उनके लबादे का एक टुकड़ा होता था जिसे खिरका के रूप में जाना जाता था। यह आमतौर पर नीला होता था तथा यह रंग मातम का प्रतीक माना जाता था। सूफीवाद के अभ्यास, तसव्वुपफ को आगे सूफियों द्वारा एक सिद्वान्त के रूप में व्यक्त किया गया।[3]

भारत में 12वीं सदी में सूफी सिलसिलों का उदय इस्लामी रहस्यवाद का अन्तिम व सबसे महत्वपूर्ण काल था। मुसलमानों में आये नैतिक पतन व उस समय के मंगोल आक्रमणों ने रहस्यवादी विचारों को चुनौती दी। इस्लामी सन्तों ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति को संगठित किया तथा उस समय जब, इस्लामी राजनैतिक शक्ति कमजोर पड गई थी तथा शासन मे अनुशासन भंग हो गया था, इन सूफियों ने विष्व को विलायतो मे बांट लिया।[4] भारत में सूफी सिलसिलो के संगठन के तीव्र गति से विकास के पिछे हमें दो कारण नजर आते हैं– प्रथम, सूफीमत की प्रषासकीय शक्ति इसे भारत में ले आई।द्वितीय,उस समय मंगोल आक्रमणों सेइस्लामी साम्राज्य आतंकित था, परन्तु दिल्ली सल्लनत् ने किसी तरह अपने आप को उन आक्रमणों से या तो बचा लिया था या उनका फिर सफलतापूर्वक साहस किया।[5]

12वीं शदी के अन्त में हिन्दुस्तान पर विजय के परिणामस्वरूप तुर्कों ने अपने आप को एक ऐसी भूमि पर पाया जहाँ धर्मिक वास्तुकला की एक उच्च विकसित परम्परा रही थी परन्तु उनकी शैली तुर्कों की शैली से नितान्त भिन्न थी।[6] तुर्क अपने साथ वास्तुकला सम्बन्धी अपनी विशिष्ट शैली लेकर आये जिसे 'महराबीय शैली' कहा जाता है जबकि यहाँ की परम्परावादी वास्तुकला 'ट्रैबिएट' पर आधरित थी।[7] विजेताओं ने यहाँ तीन तरह से भवन–निर्माण कार्य किया। प्रथम, पुराने भवन का केवल ऊपरी हिस्सा तोड़कर पुराने आधर पर ही नया ढांचा बनाना। दूसरे, पुराने ढांचे को तोड़कर उसकी सामग्री से ही नया भवन बनाना। तीसरे, बिल्कुल नई सामग्री से भवन बनाना।[8] पारम्परिक हिन्दुस्तानी भवनों में किसी जोड़ने वाली सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता था अपितु पत्थरों को एक–दूसरे में इस तरह स्थापित किया जाता था कि वे स्थिर खड़े रहें। तुर्कों के आगमन से हमें चुने आदि जोड़ने वाली सामग्री का प्रयोग मिलता है।[9] जहाँ 'हिन्दू वास्तुकला' के प्रेरक तत्व मुख्यतः मन्दिरों से प्रकट होते हैं वहीं 'इस्लामी वास्तुकला' को दो भागों में बांटा जा सकता है– धर्मिक, जिसमें मस्जिद, मकबरे आते थे और सांसारिक, जिसमें आम प्रयोग के भवन आते थे।[10]

प्रस्तुत शोध पत्र में मैने मध्यकालीन पलवल में मौजूद शेख शाहबाज व शेख रोशन चिराग के मकबरों का वास्तुकला के दृष्टिकोण से अध्ययन किया है जो प्रमुखतः मेरे द्वारा किए गए इन भवनो प्रत्यक्ष व भैतिक परिक्षण और मूल्यांकन पर आधारित है।

---

[1] के.ए. निजामी,*मिस्टिक्स', इस्लाम,* पटियाला,1969, पृष्ठ 58–59
2 के सी यादव ,*हरियाणा,स्टीडी एण्ड कल्चर,* कुरुक्षेत्र1968,पृष्ठ,6
[3] डेविड वेन्स, *एन इन्ट्रॉडक्सन टू इस्लाम,* कैम्ब्रिज, 1995, पृ 137
[4] एम मुजीब,*द इंडियन मुस्लिम,,*दिल्ली 1995(प्रथम संस्करण,1967)
[5] वही
[6] बारबरा ब्रेन्ड, *इस्लामिक आर्ट,* कैम्ब्रीज, 1991, पृ। 203
[7] पर्सी ब्राउन, *इण्डियन आर्किटैक्चर ,इस्लामिक पीरियडद्ध,* बॉम्बे, 1964, पृ। 2
[8] वही, पृ। 4
[9] वही, पृ। 2, देखें अहसान जान कैजर, *बि ल्डग कंस्ट्रक्सन इन मुगल इण्डिया, ऑक्सफर्ड,* 1988, पृ। 16–33
[10] वही, पृ। 3

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

शेख रोशन चिराग का मकबरा, पलवल

शेख रोशन चिराग का मकबरा पलवल शहर के मध्य–पूर्व में तथा दिल्ली–मथुरा रोड के पश्चिम में स्थित है।[11] इसका निर्माण–कार्य उसी समय हुआ था जब दिल्ली में शाहजहानाबाद के किले का निर्माण हो रहा था। जब भरतपुर, फतेहपुर–सिकरी व उनके आसपास के क्षेत्रों से लाल पत्थर शाहजहानाबाद के किले के निर्माण के लिए दिल्ली लाया जा रहा था तो शेख रोशन चिराग ने हर गाड़ी से एक पत्थर लिया तथा उन्ही पत्थरो से 1661 ई में इस भवन का निर्माण हुआ।[12]

यह लाल पत्थर से बना हुआ एक वर्गाकार भवन है जिस का माप 20′×20′ है। पूरा भवन 2′ ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है। मकबरे में चारों तरफ 7′4″ चौड़े विशाल मेहराब बने हुऐ हैं जो ऊपर–नीचे दो भागों में विभक्त हैं।[13] दक्षिण कि तरफ मौजूद मेहराब मे लिंटेल की सहायता से 3′ चौड़ा मुख्य प्रवेश द्वार बनाया गया है जिसके ऊपर रोशनी और हवा के लिये 20′ चौड़ी पत्थर कि जाली लगाई गई हैं।[14] मुख्य मेहराबीय प्रवेश–द्वार को छोड़कर बाकी तरफ दो–स्तरीय जालियो का निर्माण किया गया है। मकबरे की बाहरी दीवारें चारों तरफ से ज्यमीतिय सजावट से भरपूर हैं। कौनो से छोटी मीनारें ऊपर उठाई गई हैं।[15] ये छोटी मीनारें आपस में पत्थर की बंद जालियों से जुड़ी हुई हैं। आंतरिक दीवारे सादगी से परिपूर्ण हैं।[16] मकबरे के उपर एक गुंबद बनाया गया है।[17] यह बाहरी तरफ से बेलनाकार ग्रीवा पर आधारित है जिस पर पद्मकोश का निर्माण किया गया है जिससे गुंबद को अतिरिक्त सुंदरता प्राप्त हुई है। गुंबद का निर्माण स्थानीय स्तर पर उप्लब्ध छोटे पत्थरों व चूने से किया गया है जिन पर पत्थर की स्लैब लगाई गई हैं। अंदर से वर्गाकार दीवारों पर कोण–मेहराब बनाऐ गये हैं जिन पर गुंबद को उठाया गया है।[18] मकबरे के मध्य में मुख्य सिनेटाफ मौजूद है।[19] दक्षिण की तरफ मेहराबीय प्रवेश द्वार के ऊपर एक उत्कीर्ण–लेख मौजूद है जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है:

"सैयद चिराग, मदीना का निवासी, कोई भी नहीं प्रतीत हुआ जो उनकी तरह रहस्यों का स्वामी हो। जब मैंने बुद्धि से इसकी तिथि के बारे में पूछा तो उसने कहा 'यह मकबरा दुखों का निवारण बन गया' दिनांक 28 धु–ए–हिज्जा, साल 1072"[20]

शेख शाहबाज का मकबरा, पलवल

शेख शाहबाज का मकबरा पलवल शहर मे पुराने जीटी रोड के पश्चिम में स्थित है जो वर्तमान में हरियाणा हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी से घिरा हुआ है।[21] अष्टभुजाकार शैली में बना हुआ यह मकबरा 17 वी सदी में निर्मित हुआ था।[22] आधारभूत यह मकबरा 6′ ऊंचे मचान पर बनाया गया है।[23] इस मचान पर 2′ ऊंचा एक और चबूतरा बनाया गया है जिस पर मकबरे का मुख्य भवन निर्मित है। इस अष्टभुजाकार भवन की प्रत्येक भुजा की दीवार की लंबाई 17′ है। निर्माण में अनगढे पत्थरों, छोटे पत्थरों व चूना का प्रयोग किया गया है। बाहरी व आंतरिक निर्माण में खुरासानी मेहराब का प्रयोग किया गया है। इस अष्टभुजाकार भवन की प्रत्येक दीवार में मेहराब बनाए गऐ हैं जिनमें से प्रत्येक की चौड़ाई 8′6″ है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण दिशा के मेहराबीय प्रवेश–द्वारों में प्रकाश व हवा की

---

[11] देखे चित्र 1

[12] सी.जे. रोजर्स, *रिवाईज्ड लिस्ट ऑफ द् ऑबजैक्ट्स ऑफ आर्कियालॉजिकल इनट्रस्ट इन द् पंजाब, लाहौर,* 1891, पृ. 83; *ऐपिग्राफिया इंडो–मुस्लिमिका 1907–12,* नई दिल्ली 1987, पृ. 4 (भाग 1911–12, कलकत्ता, संपादक डॉ. ई.डी. रोस)

[13] देखे चित्र 2

[14] देखे चित्र 1

[15] देखे चित्र 1, 4

[16] देखे चित्र 3

[17] देखे चित्र 4

[18] देखे चित्र 3

[19] देखे चित्र 5

[20] *ऐपिग्राफिया इंडो–मुस्लिमिका, पूर्व उ(त,,* पृ. 4

[21] देखे चित्र 6

[22] डायरेक्टोरेट ऑफ आर्कियालॉजि एण्ड म्यूजियम्स, हरियाण सरकार की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध सूची, *लिस्ट ऑफ प्रोटेक्टिड एण्ड अनप्रोटेक्टिड मॉन्युमेन्टस्/साईट्स ऑफ हरियाणा* के अनुसार।

[23] देखे चित्र 6

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

पर्याप्त मात्रा प्राप्त करने हेतु छोटे–छोटे रोशनदानो का निर्माण किया गया हैं। जिनकी प्रत्येक की चौड़ाई 3 फीट 11 इंच है।[24] इन आठ मेहराबो मे प्रवेश केवल 4 प्रवेश–द्वारो से ही है। शेष चार मेहराबो को अर्ध–अष्टकोणीय गहरे बंध ताखो का रूप दिया गया है।[25] ये भी खुरासानी व हनीकोम्ब शैली से सुशोभित हैं। हालांकि प्रवेश–द्वारों व इनके डिजाइन में एकरूपता नहीं है। प्रत्येक की गहराई 4′7″ है जबकि प्रवेश–द्वार की चौड़ाई 3′7″ है। प्रवेश–द्वार की बाहरी बनावट मेहराबीय शैली की है जबकि मुख्य प्रवेश–द्वार को शहतीरीय शैली में बनाया गया है। मकबरे में बाहरी तरफ झूलते हुए छ्ज्जो का निर्माण किया गया है जो राजस्थानी शैली के ब्रैकेट पर आधारित हैं।[26] मौजूद अवशेषो से पता चलता है कि मकबरे का बाहरी और आंतरिक भाग नक्काशीकारी एवं चित्रकारी से युक्त रहा है।[27] किनारों से यह मकबरा 3′ चौड़ा है। चार वृहत मेहराबीय प्रवेश–द्वारों व चार गहरे मेहराबीय ताखो की ऊंचाई 12′8″ है। मकबरे पर निर्मित बड़ा गुंबद एक अष्टभुजाकार ग्रीवा पर आधारित है।[28] ऊपर जाने के लिए उत्तरी दिशा में सीढ़ियां बनी हुई है जिनकी संख्या 23 है।[29] प्रतीत होता है कि खानकाह व मुख्य कब्र नीचे स्थित है जहां जाने के लिए प्रवेश–द्वार दिखाई दे रहा है[30] परंतु यह हिस्सा मलबे से दबा होने के कारण इसके अंदर पहुंचना व उसका अध्ययन करना संभव नहीं है।

चित्र 1

[24] देखे चित्र 6

[25] देखे चित्र 7

[26] देखे चित्र 6

[27] देखे चित्र 6,7

[28] देखे चित्र 6

[29] देखे चित्र 8

[30] देखे चित्र 9

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

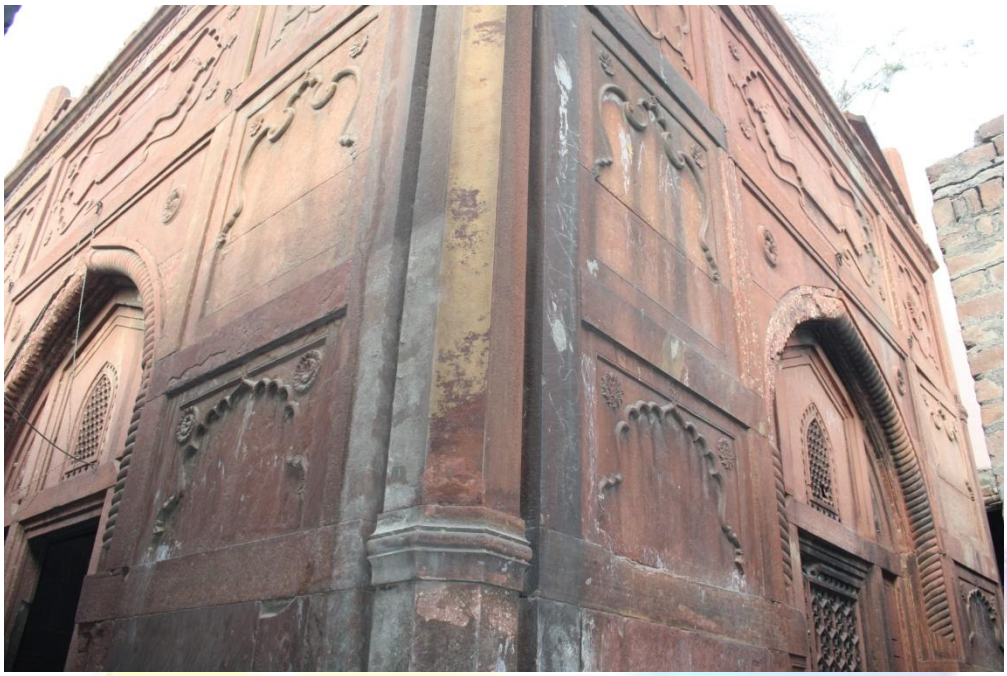

चित्र 2

चित्र 3

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

चित्र 4

चित्र 5

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

चित्र 6

चित्र 7

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

चित्र 8

चित्र 9

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)